ग्राम डाँग में सामाजिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं का जीविकोपार्जन तथा पर्यावरण पर प्रभाव का अध्ययन

Bhanu Prasad^{1*} Dr. Mahesh Singh²

¹ Research Scholar, Himalayan Garhwal University, Uttarakhand

² Assistant Professor, Himalayan Garhwal University, Uttarakhand

Abstract – Culture is the social behavior and norms found in human societies. Culture is considered a central concept in anthropology encompassing the range of phenomenon that are transmitted through social learning in human societies these includes expressive forms like art, music, dance, ritual and technologies like tool usage , cookery, shelter and clothing. A person’s livelihood refers to their means of securing the basic necessities food, water, shelter, and clothing of life. Livelihood is defined as a set of activities performed to live for a given life span. Involving securing water, food, fodder, medicine, shelter, clothing and the capacity of acquire above necessities working either individually or as a group. During our investigation we find that social and cultural traditions of this area are very strong and these are beneficial for the society either ecologically as well as a means of livelihood. Due to the time, money, energy and other constraints the purposed study was delimited to the village Dang, Rankandiyal, Bonga, and Mulana. In the present investigation, a sample of 75 was selected randomly. The questionnaire and interview was used for collection of data. The data arranged into tables and was calculated. The data was analyzed and interpreted using percentage technique to achieve the objectives and verifying the hypothesis of the study. During our investigation we find that social and cultural traditions of investigated area are important for livelihood as well as for environment.

-----X-----

1. परिचय

संस्कृति मानव की सामाजिक एवं सहज व्यवहार तथा मानदण्ड हैं। मानव विज्ञान में सामाजिक शिक्षा के माध्यम से प्रसारित घटनाओं की सीमा को शामिल करते हुए संस्कृति काम मानव विज्ञान में एक केन्द्रिय अवधारणा माना जाता है। संस्कृति मानव समाज में पाया जाने वाला सामाजिक व्यवहार एवं मानदंड है। मानव विज्ञान में सामाजिक शिक्षा के माध्यम से प्रसारित घटनाओं की सीमा को शामिल करते हुए संस्कृति को मानव विज्ञान में एक केन्द्रीय अवधारणा माना जाता है। सांस्कृतिक सार्वभौमिक सभी समाजों में पाए जाते हैं इनमें कला, संगीत, अनुष्ठान, धर्म और उपकरण उपयोग जैसे अभिव्यक्तपूर्ण रूप शामिल हैं। आजिविका में सामुदायिक के जीवन निर्वाह के मूल आवश्यकताओं जैसे रोटी, कपड़ा और मकान के संसाधन सम्मिलित होते हैं। संसाधनों में सामाजिक तथा परम्परागत साधन शामिल होते हैं। इस प्रकार से प्रस्तुत परियोजना को उक्त क्षेत्र में सामाजिक तथा सांस्कृतिक

परम्पराओं का जीविकोपार्जन तथा उसका पर्यावरण पर प्रभाव के दृष्टिकोण से अध्ययन किया गया है।

2. परिकल्पना

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु शून्य परिकल्पना का निर्माण किया गया।

“सामाजिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं का जीविकोर्जन तथा पर्यावरण पर कोई भी सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।”

3. उद्देश्य

शीर्षक चुनने का मुख्य उद्देश्य निम्न है।

1. सामाजिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं का महत्व एवं उपयोग समझ पायेंगे।

2. सामाजिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं का जीविकोपार्जन के सन्दर्भ में अध्ययन करना।
3. सामाजिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं का पर्यावरणीय महत्व का अध्ययन करना।

4. समस्या का सीमांकन

समय श्रम और संसाधनों की बचत के लिये समस्या को ग्राम डॉंग और उसके आसपास के क्षेत्रों तक सीमित रखा गया।

5. अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत परियोजना कार्य हेतु विकास खण्ड कीर्तिनगर के ग्राम डॉंग, रणकण्डियाल, मुलाणा को चुना गया जिसकी स्थिति $30^{\circ} 13' N 78^{\circ} 46'E / 30.22^{\circ} N 78.58^{\circ} E$ है। यह स्थान विकास खण्ड मुख्यालय से 8 से 10 किमी⁰ की दूरी पर है। यहाँ पर प्रचुर मात्रा में मालू भीमल गुरियाल आदि होते हैं।

6. कार्य प्रणाली

1. जनसंख्या - प्रस्तुत परियोजना हेतु सीमांकित क्षेत्र की जनसंख्या को चुना गया।
2. आँकड़ों को एकत्र करने हेतु नमूने का चयन (Sampling) - प्रस्तुत परियोजना हेतु Random Sampling के आधार पर डॉंग, रणकण्डियाल, मुलाणा के 82 परिवारों को चुना गया।
3. आँकड़ों को एकत्र करने हेतु उपकरण (Tool used for collection of data)

प्रस्तुत परियोजना हेतु आँकड़ों को एकत्र करने हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। आधार पर डॉंग, रणकण्डियाल, मुलाणा के स्थानीय तथा उम्दराज लोगों से साक्षात्कार किया गया। जिससे इन पादप तथा वृक्षों का महत्व तथा उनका विभिन्न सामाजिक एवं स्थानीय परम्पराओं में उपयोग की जानकारी जुटाई गई।

पर्यावरणीय एवं औषधीय उपयोग - लगभग सर्व सुलभ होने के कारण स्थानीय निवासियों के द्वारा इनका प्रयोग किया जाता है। तथा स्थानीय निवासियों द्वारा कई सदियों से निरन्तर निम्न पेड़ पौधों का प्रयोग किया जाता रहा है।

1. **भीमल (Grevia Optiva)** – यह पहाड़ों में खेतों के किनारे बहुतायत से 12 से 14 मीटर ऊँचे पेड़ होते हैं। स्थानीय स्तर पर पशुओं के लिये सर्वोत्तम प्रजाति का हरा चारापत्ती

माना जाता है। साथ ही साथ शाखाओं के तने की छाल को सुखाकर उसके बाद 25 से 30 दिनों तक पानी में रखने के बाद इसके शाखाओं से सेलू (रेशा) अलग निकाल कर इससे रस्सी, बैग, फर्श में बिछाने के पायदान, चटाई, कीचन के उपयोग हेतु चप्पल तथा अन्य सजावटी सामान बनाया जाता है। छाल निकालने के बाद शेष भाग को ईंधन के रूप में प्रयोग किया जाता है। कच्ची छाल को कूटकर बालों को धोने हेतु शैम्पू के विकल्प के रूप में प्रयोग किया जाता है। छाल का पेस्ट हड्डियों को जोड़ने के लिये प्रयोग किया जाता है। भीमल की पत्तियों को पानी में पकाकर उसके पेस्ट से घुटनों के दर्द में भी राहत मिलती है।

2. **मालू (Bauhinia vahli)** – मालू को लता कचनार भी कहा जाता है जो सख्त तने वाली बेल प्रकार का पौध है जो किसी बड़े पेड़ों पर फैली होती है। इसकी शाखा 12 से 15 मी तक लम्बी हो सकती है। इसके पत्ते 7 से 10 इंच तक चौड़े होते हैं। यह पहाड़ी स्थानों पर बहुतायत से पाया जाता है। मालू के पौधे पारिस्थिकीय संतुलन के साथ-साथ जल-ओत तथा मृदा संक्षरण में महत्वपूर्ण योगदान होता है। मालू का उपयोग चारा के साथ साथ इसके छाल, फूल, पत्तों का काढ़ा शरीर में बन रहे गाँठों की बीमारी जुकाम खाँसी में किया जाता है। इसके बीजों का प्रयोग दवा के रूप में किया जाता है। मालू के पत्ते चौड़े होने के कारण इससे बढ़िया किस्म के दोने पत्तल बनाये जा सकते हैं जो आजीविकावर्धन के साथ साथ प्लास्टिक के स्थान पर प्रयोग से पर्यावरण के नुकसान को कम करने में सहायक होते हैं। मालू के रेशे लचीले होने के कारण अत्यन्त उपयोगी होती हैं।

3. रिंगाल (Drepanostachyum Falcatum) तथा

बाँस (Bambusa vulgaris) – रिंगाल ऊँचाई वाले स्थानों

पर उगने वाला एक झाड़ी प्रजाती का पौधा है। इसकी औसत ऊँचाई 2 से 3 मीटर तक होती है। रिंगाल तथा बाँस का रोपण मृदा कटाव रोकने के लिये अच्छा विकल्प होता है। कई वर्षों पहले तक जब पहाड़ों में खेती मुख्य व्यवसाय हुआ करती थी तो की कारीगरी चरम पर होती थी। यह चारा पत्ती के साथ साथ खेती में बहुत ही उपयोगी होता था। उससे खेती में सहायक विभिन्न प्रकार के वस्तुएं जैसे- कण्डे, सोल्टे, सूप, टोकरी, चटाई, हथकण्डी के साथ-साथ सजावटी वस्तु जैसे गुलदस्ते फूलदान कलम दान आदि अन्य उपयोगी वस्तुएं बनाई जाती थी, लेकिन धीरे धीरे खेती के साथ साथ यह कुटीर उद्योग भी विलुप्त हो रहा है। इससे आजीविका वर्धन के साथ-साथ प्लास्टिक के विकल्प के तौर पर उपयोग में लाया जा सकता है। बाँस तथा रिंगाल के कोंपलों से आचार तथा स्थानीय वैद्यों द्वारा फोड़े फुन्सी

के लिये दवा भी बनायी जाती है। बाँस का उपयोग भवन निर्माण के क्षेत्र में उपयोग किया जाता है। जब कृषि तथा पशुपालन व्यवसाय समृद्ध थे तब रिंगाल उद्योग आजीविका का सबल संसाधन हुआ करता था।

पारंपरिक उत्पादों का जीविकोपार्जन तथा पर्यावरण परीक्षण एवं समस्याओं का समाधान - अध्ययन हेतु निर्धारित स्थानों के लोगों से विभिन्न जानकारी लेते हुए उनके सुझावों पर भी चर्चा की गई कि किस प्रकार से इनको व्यावसायिक रूप से आजीविका का साधन बनाया जा सकता है।

पौध की प्रजाति	पारम्परिक वस्तुएं	आधुनिक समय की मांग
मालू	रस्सी, सामाजिक तथा धार्मिक अवसरों पर फल्लल दोने आदि	बैग, रस्सी, फल्लल तथा दोने का व्यावसायिक तर्ज पर उत्पादन हो तो यह आजीविका के साधन के तौर पर विकसित किया जा सकता है।
भीमल	टोकरी, कण्डी रस्सी आदि	सुन्दर तथा आकर्षक बैग ब्रप्पल तथा रीम्पू फल्लन दान अन्य सजावटी वस्तुएं बनाने जाय।
रिंगाल तथा बाँस	टोकरी, कण्डी आदि	फूलदान, कलमदान, कण्डी, टोकरी, कप, प्लेट तथा हथकण्डी आदि बनायी जा सकती हैं।

निम्न तालिका से ग्रामीणों से अनुमान लगाकर उपरोक्त पौधों से होने वाली अनुमानित आय के बारे में समझाया गया –

पौध की प्रजाति	पौध की संख्या	प्रति पौध से अनुमानित उत्पादन	दर @ अनुमानित	अनुमानित आय ₹० में
भीमल	01	50 किलो रेशा	50 ₹० प्रति किलो	2500.0
मालू	01	3000 पल्ले	0.75 ₹० प्रति पल्ले	2250.0
रिंगाल तथा बाँस	01	25 बल्ली	120.0 ₹० प्रति बल्ली	3000.0

7. विश्लेषण

1. क्या आप स्थानीय रीति रिवाजों में मानते हैं?

हाँ/नहीं

हाँ (स्कोर)	प्रतिशत	नहीं (स्कोर)	प्रतिशत
69	84.15	13	15.85

2. क्या स्थानीय रीति रिवाजों में ह्यस उत्पन्न हो रहे हैं?

हाँ/नहीं

हाँ (स्कोर)	प्रतिशत	नहीं (स्कोर)	प्रतिशत
82	100.0	0	0.0

3. क्या स्थानीय परम्परागत रीति रिवाजों में ह्यस के लिए आप किसको उत्तरदायी मानते हैं?

1. पलायन

2. आधुनिकीकरण

3. विपणन की सुविधाओं का अभाव

4. उपरोक्त सभी।

पलायन	आधुनिकीकरण	विपणन की सुविधाओं का अभाव	उपरोक्त सभी
37	22	12	11
45.12	26.83	14.63	13.42

4. क्या कृषि आधारित रोजगार के अवसरों को विकसित किये जाने की आवश्यकता है?

हाँ/नहीं

हाँ (स्कोर)	प्रतिशत	नहीं (स्कोर)	प्रतिशत
82	100.0	0	0.0

5. क्या कृषि तथा पशुपालन में कमी आने से पारम्परागत रीति रिवाज समाप्त हो रहे हैं?

हाँ/नहीं

हाँ (स्कोर)	प्रतिशत	नहीं (स्कोर)	प्रतिशत
59	71.95	23	28.05

6. परम्परागत रीति रिवाजों के संरक्षण हेतु सरकारी प्रयास किया जाना चाहिए?

हाँ /नहीं

हाँ (स्कोर)	प्रतिशत	नहीं (स्कोर)	प्रतिशत
82	100	0	0

7. निम्नलिखित पौधों का उपयोग परम्परागत रूप से कैसे किया जाता है?

1. रिंगाल तथा बाँस

2. भीमल

3. मालू

4. उपरोक्त सभी।

रिंगाल तथा बॉस	भीमल	मालू	उपरोक्त सभी
22	38	12	10
26.83	46.34	14.63	12.20

8. भीमल का प्रयोग आप किस रूप में करते हैं?

1. टोकरी बनाने में
2. औषधी बनाने में
3. पशुओं के चारे हेतु
4. ईंधन के रूप में।

रस्सी/टोकरी बनाने में	औषधी बनाने में	पशुओं के चारे हेतु	ईंधन के रूप में
12	4	45	21
9.75	6.10	38.84	32.5

9. भीमल का औषधीय उपयोग कैसे किया जाता है?

भीमल की स्वस्थ पत्तियों को पानी के साथ पकाकर उसके पेस्ट से घुटनों लगाने से दर्द में राहत मिलती है।

10. रिंगाल का प्रयोग आप किस रूप में करते हैं?

1. हस्तशिल्प में
2. औषधी बनाने में
3. पशुओं के चारे हेतु
4. ईंधन के रूप में।

हस्तशिल्प में	औषधी बनाने में	पशुओं के चारे हेतु	ईंधन के रूप में
59	5	18	0
78.04	0.06	21.95	0.0

11. क्या आप मालू के स्थानीय उपयोग को जानते हैं?

1. दौने पत्तल बनाने में
2. रस्सी बनाने हेतु
3. घरेलू दवा उपचार हेतु
4. सभी उपयोग हेतु।

रस्सी बनाने हेतु	दौने पत्तल बनाने में	चारा उपयोग हेतु	सभी उपयोग हेतु
4	46	30	2
04.88	56.10	36.58	02.44

12. क्या रेशा आधारित उद्योग आजीविका के साधन हो सकते हैं?

हाँ/नहीं

हाँ (स्कोर)	प्रतिशत	नहीं (स्कोर)	प्रतिशत
65	79.27	17	20.73

13. क्या रेशा आधारित उद्योगों से रोजगार के अवसर बढ़ेंगे?

हाँ/नहीं

हाँ (स्कोर)	प्रतिशत	नहीं (स्कोर)	प्रतिशत
80	97.56	02	02.44

14. कृषि आधारित उद्योगों को स्थापित करने पर खेती तथा पशुपालन को महत्व मिलेगा? हाँ/नहीं

हाँ (स्कोर)	प्रतिशत	नहीं (स्कोर)	प्रतिशत
72	87.80	10	12.20

15. उत्तराखण्ड में हो रहे पलायन का मूल कारक क्या हैं?

1. रोजगार
2. चिकित्सा सुविधा का न होना
3. शिक्षा
4. सभी उपयोग हेतु।

रोजगार	चिकित्सा सुविधा का न होना	शिक्षा	सभी उपयोग हेतु
30	12	25	15
36.59	14.63	30.49	18.29

16. पर्यावरण की दृष्टि से आपको रीति रिवाज कैसे लाभकारी प्रतीत होते हैं? विचार लिखिए।

सभी ने अपने-अपने विचार से स्थानीय रीति रिवाजों को पर्यावरण के लिये महत्वपूर्ण माना है।

8. परिणाम

ऑकड़ों के विश्लेषण से निम्न परिणाम प्राप्त हुए -

1. 82 में से 69 (84.15%) लोगों ने माना कि वे पारम्परिक रीति रिवाजों को मानते हैं।
2. सभी (100%) लोग मानते हैं कि पारम्परिक रीति रिवाज समाप्त हो रहे हैं।
3. पारम्परिक रीति रिवाजों को समाप्त होने के लिये 45.12% पलायन को 26.83% आधुनिकीकरण 14.63% विपणन की सुविधाओं का अभाव, 13.42% उपरोक्त सभी कारणों का जिम्मेदार मानते हैं।
4. कृषि पर आधारित रोजगार को बढ़ावा दिये जाने के लिए सभी की सहमति हाँ में थी।
5. 71.95% लोगों को लगता है कि कृषि तथा पशुपालन में कमी आने से परम्परागत रीति रिवाज समाप्त हो रहे हैं।
6. सभी की राय थी कि परम्परागत रीति रिवाजों के संरक्षण हेतु सरकारी प्रयास किया जाना चाहिए।
7. 26.83% लोग बाँस तथा रिंगाल, 46.34% भीमल 14.63% मालू 12.20% सभी पौधों को पारम्परिक रूप से उपयोग करते हैं।
8. सर्वाधिक 38.84% लोग मानते हैं भीमल को पशुओं के चारे के रूप में 6.10% औषधी के रूप में 09.75% रस्सी/टोकरी बनाने 32.50% ईंधन के तौर पर उपयोग की राय रखते हैं।
9. औषधी के रूप में भीमल की छाल का पेस्ट हड्डियों को जोड़ने के लिये प्रयोग किया जाता है। भीमल की पत्तियों को पानी में पकाकर उसके पेस्ट से घुटनों के दर्द में भी राहत मिलती है।

10. 78.04% रिंगाल को हस्तशिल्प के लिए 0.06% औषधी रूप में 21.95% ईंधन के रूप में प्रयोग करते हैं।

11. मालू को 56.10% दाने पत्तल बनाने में 36.58% चारा उपयोग हेतु 04.88% हरस्सी बनाने के उपयोग तथा 2.44% सभी दपयोग की राय रखते हैं।

12. 79.27% लोगों को लगता है कि रेशा आधारित लघु उद्योग आजीविका के साधन हो सकते हैं।

13. 97.56% लोगों की राय थी कि रेशा आधारित जैसे लघु उद्योग लगाने से रोजगार के अवसर पैदा होंगे तथा पलायन रुकेगा।

14. 87.80% लोग कृषि आधारित उद्योगों को स्थापित करने पर खेती तथा पशुपालन को महत्व तथा बढ़ावा मिलने की राय रखते हैं।

15. पलायन की मुख्य वजह के लिये रोजगार 36.59%, चिकित्सा सुविधा 14.63%, शिक्षा को 30.49% तथा 18.29% लोग उक्त सभी कारणों को जिम्मेदार मानते हैं।

16. सभी ने अपने-अपने विचार से स्थानीय रीति रिवाजों को पर्यावरण के लिये महत्वपूर्ण माना है।

9. निष्कर्ष (Conclusion)

अतः अध्ययन के बाद तथ्यों के आधार पर हम कह सकते हैं कि "सामाजिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं का जीविकोर्जन तथा पर्यावरण पर सार्थक प्रभाव पड़ता है"। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हुई।

10. स्वानुभव

1. विभिन्न स्थानीय सामाजिक तथा सांस्कृतिक परम्पराओं का ज्ञान होगा।
2. स्थानीय प्राकृतिक संसाधनों का ईष्टतम उपयोग की जानकारी होगी।
3. परम्परागत स्वरोजगार तथा स्थानीय हस्तशिल्प को बढ़ावा मिलेगा।
4. पर्यावरण संक्षरण तथा संवर्धन को बढ़ावा मिलेगा।

11. समाज पर प्रभाव

इस प्रकार के अध्ययनों से स्थानीय निवासियों लोगों में पर्यावरण संरक्षण जागृति तथा इन प्रजाति के पेड़ पौधों के संवर्धन की प्रेरणा मिलेगी। जिसका आजीविका के साथ-साथ पर्यावरण पर सकारात्मक परिणाम मिलेगा। रोजगार के लिये पलायन का रहे युवा वर्ग को इन प्राकृतिक संसाधनों से कुटीर तथ लघु उद्योगों को बढ़ावा मिलेगा तथा इन आजीविका के साधनों का पर्यावरण पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं होगा क्योंकि यह जैविक उत्पाद हैं।

12. अध्ययन क्षेत्र में शोध की संभावनाएं

भविष्य में इस प्रकार के शोध कार्य को विस्तृत तथा अधिक जनसंख्या पर अधिक सार्थक परिणामों के लिये किया जा सकता है। स्थानीय ज्ञान लोककला हस्तशिल्प तथा परम्पराओं को संरक्षित किया जाना चाहिए ताकि यह जीविकोपार्जन का जरिया बन सकें। स्थानीय प्राकृत संसाधनों का विस्तृत उपयोग से प्लास्टिक के विकल्प के रूप में प्रयोग से पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

13. सन्दर्भ (References)

1. प्रस्तुत परियोजना कार्य हेतु गाँव के लोगों के उपयोगी साक्षात्कार, उत्पादन के तरीके तथा निम्न पत्र पत्रिकाओं तथा पुस्तकों का अध्ययन का उपयोग में लाया गया।
2. Dadhwal KS. et.al. 1989. Agroforestry systems in the Garhwal Himalayas of India. Agroforestry Systems. 7(3): pp. 213-225.
3. P. Joshi and P. Narain. 1992. Bhimal: a multipurpose tree for agroforestry. Indian Farming. Vol.41 no. 12 pp. 14-15.
4. www.google.com
5. सृजन पत्रिका 2015 (राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस, उत्तराखण्ड का शोध सारांश) page number 1.124.

Corresponding Author

Bhanu Prasad*

Research Scholar, Himalayan Garhwal University,
Uttarakhand